उपभोक्ता की बचत / उपभोक्ता का अतिरेक (Consumer Surplus) का विस्तार कल्याणवादी आर्थिक विश्लेषण में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। प्रो. मार्शल ने उपभोक्ता की बचत की परिभाषा निम्न प्रकार से दी है :- "किसी वस्तु के उपभोग से लाभान्वित होने की अपेक्षा उपभोक्ता जो कीमत देने को तत्पर होता है तथा जो कीमत वह वास्तव में देता है, उसका अन्तर ही अतिरिक्त संतुष्टि का आर्थिक माप है।" इसे ही उपभोक्ता की बचत कहा जाता है। (The excess of the price which he would be willing to pay rather than go without the thing, over that which he actually does pay is the economic measure of this surplus satisfaction. It may be called Consumer's Surplus.") इसे हम एक उदाहरण के द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं। - हम एक खाद्यान्न पदार्थ के लिए 90 पैसे देते हैं, परन्तु उससे कई अधिक उपयोगिता (माना कि 150 पैसों के बराबर उपयोगिता) हमें मिलती है तो इस प्रकार हमें (150-90) = 60 पैसों के बराबर बचत या अतिरेक (Surplus) का अनुभव होता है, इसे ही साधारणतया उपभोक्ता की बचत कहा जाता है। उपभोक्ता की बचत का सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक महत्व होता है। सैद्धांतिक महत्व :- उपभोक्ता की बचत का विचार किसी वस्तु के उपयोग मूल्य तथा विनिमय मूल्य के अन्तर को स्पष्ट करता है। दैनिक जीवन का अनुभव है कि कुछ ऐसी वस्तुएँ जैसे - माचिस, समाचारपत्र, पीने का पानी, इत्यादि की उपयोगिता अधिक होती है परन्तु उनके लिए हमें चुकाई जाने वाली कीमत बहुत कम होती है। ऐसी वस्तुओं के प्रयोग से उपभोक्ता को उपभोक्ता की बचत बहुत अधिक प्राप्त होती है। (2) व्यवहारिक महत्व :- 1. एकाधिकारी मूल्य निर्धारण में सहायक - यदि एकाधिकारी की वस्तु ऐसी है, जिससे उपभोक्ताओं को बहुत अधिक उपभोक्ता की बचत होती है तो एकाधिकारी अपनी वस्तु का मूल्य ऊँचा करके लाभ बढ़ा सकता है। परन्तु मूल्य ऊँचा करते समय कुछ उपभोक्ता की बचत अवश्य छोड़ देता है। (2) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लाभ की माप में भी उपभोक्ता की बचत का व्यवहारिक महत्व होता है।

राजस्व अथवा आर्थिक नीति में भी उपभोक्ता की बचत को नकारा नहीं जा सकता है। इस प्रकार उपभोक्ता की बचत का विचार राजस्व के अन्तर्गत करारोपण के क्षेत्र में महत्व रखता है।

जब सरकार किसी उद्योग को आर्थिक सहायता देती है तो उपभोक्ताओं की बचत को ध्यान में रखती है। यदि उद्योग ऐसा है जो लागत ह्रास नियम के अन्तर्गत वस्तु का उत्पादन कर रहा है, तो सरकार द्वारा आर्थिक सहायता देना उचित होगा। ऐसे उद्योग को आर्थिक सहायता देने से लागत कम होगी, इसलिए वस्तु का मूल्य कम होगा और बचत की मात्रा बढ़ेगी। मांग बढ़ने से वस्तु का उत्पादन बढ़ा। उत्पादन बढ़ने से प्रति इकाई लागत और कम होगी और मूल्य भी कम होगा। इस प्रकार उपभोक्ता की बचत में बहुत अधिक वृद्धि होगी।

अर्थात् उपभोक्ता की बचत का विचार बेकार नहीं है। इसका महत्व केवल सैद्धान्तिक ही नहीं बल्कि व्यवहारिक भी है। मार्शल ने बताया कि किसी देश में उपभोक्ता की बचत वहाँ की सामाजिक, सामाजिक तथा राजनीतिक परिस्थितियों पर निर्भर करती है। विकासशील देशों में परिवहन तथा संचारवाहन तथा समाचारपत्र की अधिक तथा सस्ती सुविधाएँ होती हैं जिसके परिणामस्वरूप उपभोक्ताओं को अधिक उपभोक्ता की बचत (Consumer Surplus) की प्राप्ति होती है।

— x — x —

शास्त्री-I yr.
R.U.S. College
12/10/20. Surhsena Purnea.

भारत में चीनी उद्योग की वर्तमान स्थिति समस्याएँ एवं निवारण (Sugar Industry) उपसाप्ती-20

12/10/20

भारत के संगठित उद्योगों में चीनी उद्योग का विशिष्ट स्थान प्राप्त है। विश्व में चीनी उत्पादक का सबसे महत्वपूर्ण राष्ट्र भारत है। भारत में चीनी उद्योग में लगभग 35 लाख मजदूरों को रोजगार मिला हुआ है। गन्ने के उत्पादन में लगभग 3 करोड़ किसान लगे हुए हैं। 1950-51 में देश में चीनी मिलों की संख्या 138 थी। और चीनी का उत्पादन 11 लाख टन था। जो 1997-98 में बढ़कर 132 लाख टन हो गया। भारत में गन्ने से तीन प्रकार से चीनी तैयार की जाती है - आधुनिक कारखानों द्वारा सफेद चीनी, स्वदेशी चीनी अथवा खांडसारी जो भूरे रंग की होती है तथा गुड़। चीनी उद्योग पर कुछ अन्य सहायक उद्योग भी आश्रित हैं। उदाहरण के लिए कपास उद्योग, गन्ने की खोई (bagasse) का प्रयोग कागज बनाने के लिए किया जाता है। भारत में चीनी के अधिकांश कारखाने उत्तर प्रदेश तथा बिहार में स्थित हैं। इन दो राज्यों में देश के कुल कारखानों के दो तिहाई कारखाने पाये जाते हैं। जिसका प्रमुख कारण यह है कि यह दोनों राज्य देश में गन्ने के सरल उत्पादक हैं। वर्तमान में उत्तर प्रदेश एवं बिहार के अतिरिक्त पंजाब, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश एवं केरल आदि राज्यों में भी चीनी उद्योगों का विस्तार किया गया है।

भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में चीनी उद्योग का महत्वपूर्ण स्थान इसलिए है कि भारत के किसानों के मूल्य आय के स्रोत चीनी उद्योग ही हैं।

चीनी उद्योग की वर्तमान समस्या एवं उसका निवारण:→ गन्ने की प्रति एकड़ कम उपज — भारत में विश्व के अन्य देशों की तुलना में गन्ने की प्रति एकड़ औसत उपज बहुत ही कम है। इसके अतिरिक्त देश के सभी भागों में गन्ने का औसत उपज एक समान नहीं है। भारत में गन्ने के प्रति एकड़ औसत उपज 17 टन है, लेकिन उ० प्र० उत्तर प्रदेश एवं बिहार में गन्ने की प्रति एकड़ औसत उपज केवल 11 टन है। विदित है कि इन दो राज्यों में देश के कुल उत्पादन की दो तिहाई गन्ना उपजाया जाता है लेकिन इसकी प्रति एकड़ औसत उपज इन दो राज्यों में बहुत ही कम है। इसके ही दक्षिण भारत में प्रति एकड़ औसत उपज अधिक है।

वास्तव, भारत में चीनी उद्योगों की समस्या के समाधान के लिए समुचित सिंचाई, उत्तम खाद एवं उन्नत बीज, इत्यादि की व्यवस्था की जानी चाहिए, जिससे गन्ने का औसत उपज बढ़े।

क्रमशः

P. T. O

(11) (चीनी उद्योग) उपभाषाएँ - 20

(2) गन्ने की अभाव (Shortage of Sugarcane) :— भारत के चीनी उद्योगों के समक्ष पर्याप्त मात्रा में गन्ने नहीं मिलने की प्रमुख समस्या है। यह समस्या उत्तर प्रदेश तथा बिहार में है। इसका मुख्य कारण यह है कि इन दोनों राज्यों में चीनी की मिलें बहुत कम दूरी पर स्थित हैं, जिसके फलस्वरूप इन मिलों को गन्ने के लिए प्रतियोगिता करनी पड़ती है। प्रतियोगिता के कारण गन्ने का मूल्य भी बढ़ जाता है। दूसरी बात यह है कि बहुत से गन्ना उत्पादक, गन्ने चीनी मिलों के साथ न रहकर स्वयं गुड़ बनाने का काम करते हैं क्योंकि गुड़ बनाना अपेक्षाकृत अधिक लाभदायक होता है। वास्तव में इस समस्या के समाधान के लिए सबसे पहले, समुन्नत सिंचाई, खाद, बीज द्वारा गन्ने के उत्पादन को बढ़ाना है। इतना ही नहीं चीनी मिलों द्वारा गन्ना उत्पादकों को उचित मूल्य भी दिया जाना चाहिए ताकि अधिक उत्पादन करने और गन्ने को चीनी मिलों में देने को प्रोत्साहित हों। (3) गन्ने में अपेक्षाकृत कम चीनी का होना। — भारत में गन्ने की प्रति एकड़ औसत उपज तो कम है ही, लेकिन उसके साथ-साथ यहाँ के गन्ने में अपेक्षाकृत कम चीनी प्राप्त होती है। जिसका प्रमुख कारण यह है कि इस देश में गन्ने की किस्में (Qualities) अच्छी नहीं हैं। वास्तव में इस समस्या के समाधान के लिए गन्ने के किस्म में सुधार लाना आवश्यक है। प्रायः मिलों तक गन्ना पहुँचाने में जो अधिक देरी होती है, इसे भी कम करने की कोशिश होनी चाहिए। (4) चीनी का मूल्य अधिक होना। → भारत में चीनी का उत्पादन व्यय अधिक होने के कारण चीनी का मूल्य बढ़ जाता है, अतः इस समस्या के समाधान के लिए उत्पादन व्यय को तत्काल कम करना होगा। इस समस्या के समाधान के लिए अलाभकर कारखानों को अनुकूलतम आकार देकर कारखानों में आधुनिक मशीनों एवं मशीनों का प्रयोग करके गन्ने के उत्पादन में वृद्धि कर, खोई, मिलों के गौण पदार्थों का समुचित उपयोग करके उत्पादन व्यय को कम किया जा सकता है, अन्यथा इनसे मूल्यों में कमी होगी। भारत में अधिकांश चीनी मिलें पुरानी पड़ गई हैं, जिसके फलस्वरूप चीनी का उत्पादन व्यय के स्तर तथा मशीनरी पुरानी पड़ गई हैं, जिसके फलस्वरूप चीनी का उत्पादन व्यय अधिक हो जाती है, फलतः चीनी के मूल्य बढ़ जाते हैं। निःसंदेह चीनी मिलों के आधुनीकीकरण द्वारा चीनी के उत्पादन में वृद्धि तथा उत्पादन लागत में कमी की जा सकती है। अतः सरकार एवं राष्ट्रीय औद्योगिक विकास निगम को चाहिए कि वे चीनी मिलों के आधुनीकीकरण के लिये सहायता प्रदान करें।

Prof - Mahesh

R.U.S. College Sukhdeva. Mahesh 12/10/20

pervision (if removable).
11.batteries are to be inserted with the correct polarity.

Bhawan मुद्रा से आप क्या समझते हैं? वर्तमान समय में SHASTRI - II
इनके महत्व पर प्रकाश डालें? Also Bhawan for 2020 Exam

Ans: → मुद्रा एक ऐसी वस्तु है जो विनिमय का माध्यम मूल्य का मापक, कोष तथा भावी भुगतानों का माध्यम ये सभी कार्य करती है अर्थात मुद्रा वही है जो मुद्रा का कार्य करे। (Money is what money does) वास्तव में सर्वग्राह्यता (Acceptability) या सामान्य स्वीकृति मुद्रा का एक विशेष गुण है। Seligman के अनुसार "मुद्रा वह वस्तु है, जिसे सामान्य स्वीकृति प्राप्त हो। राबर्टसन के अनुसार- "मुद्रा वह वस्तु है, जिसे माल के भुगतान अथवा व्यापारिक दायित्वों के भुगतान के रूप में विस्तृत रूप से स्वीकार किया जाता हो अर्थात मुद्रा एक ऐसी वस्तु है जो विनिमय के माध्यम, मूल्य के मापक, तथा स्थगित भुगतानों का मान, तथा मूल्यों के संचय के साधन के रूप में स्वतंत्र, विस्तृत तथा सामान्य रूप से लोगों द्वारा स्वीकार किये जाते हैं। इस प्रकार Bank note, प्रतिभूतियाँ, तथा साख पत्रों को मुद्रा में सम्मिलित किया जा सकता है।

Prof मार्शल ने मुद्रा के महत्व को निम्न शब्दों में स्पष्ट किया है- "मुद्रा वह धुरी है जिसके चारों ओर सम्पूर्ण अर्थ विज्ञान चक्कर लगाता है। (Money is the pivot around which the whole economic science clusters) वास्तव में आज मानव जीवन का प्रत्येक कार्य मुद्रा पर ही आधारित है। बड़े-बड़े उद्योग, विशाल उत्पादन, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, तथा प्रत्येक प्रकार का लेन-देन मुद्रा के द्वारा ही सम्पन्न होता है। Crowther के शब्दों में मुद्रा को उत्पादक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है, क्योंकि मुद्रा आधुनिक तंत्र के धमनियों में रक्त का स्थान ग्रहण कर चुकी है। जो महत्व यंत्रशास्त्र में पहिये का, विद्युत में अग्नि, तथा राजनीति में मत (vote) का है वही स्थान मनुष्य के आर्थिक जीवन में मुद्रा के अधिकार का है। (Every branch of knowledge has its fundamental discovery. In mechanics it is the wheel in science fire in politics vote. Similarly in Economics it is the whole commercial side of man's social existence, Money is the essential invention on which all the rest is based.) मुद्रा आधुनिक आर्थिक जीवन के प्रत्येक अंग को प्रभावित करता है। यह व्यापारियों को उनका पूर्ण समय उपयोग व्यापार में लगाने की सुविधा प्रदान करते हैं। मुद्रा की सहायता से हस्तान्तरण योग्य पदार्थ तथा अन्य सामान खरीदते हैं। भी आवश्यक श्रमिकों, विशेषज्ञों एवं प्रबन्धक आदि की सेवाएँ प्रदान करती है। किन्तु मुद्रा का महत्व व्यापार तथा व्यापारियों तक ही सीमित नहीं रहता है वरन कुशल गृहपत्नियों का भी अपने पारिवारिक बजट बनाने में मुद्रा से सहायता मिलती है

IInd yr Shastri

मुद्रा समाज के असंख्य उपभोक्ताओं को दुर्लभ साधनों के सितव्ययतापूर्ण प्रयोग करने के लिए भी प्रेरित करती है। मुद्रा समाज के प्रत्येक व्यक्ति को यह विश्वास दिलाती है कि रोजगार के उपलब्ध साधनों से उन्हें अधिकतम उपयोग एवं मौद्रिक आय प्राप्त हो सकेगा — यह ठीक घोड़े की गाड़ी पर आवश्यकता से अधिक यात्री न करने, एवं इसके बदले में भारी मुनाफे के हेतु उस घोड़े को दौड़ने का असर प्रदान करती है। अर्थात मुद्रा समाज में भिन्न भिन्न वस्तुओं पर व्यक्ति के आय की मात्रा के वितरण को इस प्रकार से संभव बनाती है, जिससे कि उपभोक्ता को अधिकतम संतोष प्राप्त हो सके। इसलिए कहा जाता है कि "मुद्रा वस्तुतः पूँजीवाद का प्रतीक है।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रत्येक दिशा में आधुनिक जीवन मुद्रा के द्वारा प्रभावित होता है। मुद्रा के इस महत्व को ध्यान में रखकर ही ट्रेसकॉट (Trascot) ने कहा है कि "यदि मुद्रा हमारी अर्थव्यवस्था का हृदय नहीं तो रक्त (Blood) स्रोत तो अवश्य ही है" (If money is not the heart of our economic system it can certainly be considered its Bloodstream.)

— x —

Prof- Brajesh Pathak
R. H. S. College Surhsena.
SHASTRI - IInd yr
12/10/20.